इश्क़ तन्हाई

कवयित्री

शबनम अशाई

अनुवादक

उमर फ़रहत

shmir Treasure

शबनम अशाई और उनकी नज़्मिया शायरी से मेरी शनासाई आज की नहीं देरीना है । शबनम ना सिर्फ मेरी मदाह रही हैं बल्कि तस्तीर के दौर-ए-अव्वल में शाए भी होती रही हैं। शबनम आशाई इख़्तिसार पसंद हैं, जिन का हर नज़्मिया एक रंगीन कप्सूल की तरह है जिसमें रोगिले जिस्म से दुखी आत्मा तक के लिए त्रियाक़ भरा हुआ है, जो खुद में ज़हर भी है और ज़हर का उलाज भी। शायरी अलामतों, इस्तीआरों, पैकरों, पेराडोक्स, नास्टिल्जा तज्सीम और दीगर कई ऐसे बेनाम अनासर का इम्तज़ाज होती है जिन्हीं बाश्ज ओक़ात सिक्का बंद नकादों की नज़र गिरफ्त में नहीं ले सकती। शबनम की शायरी में पेराडोक्स को ख़ुसूसी अहमियत हासिल है।

शबनम की शायरी की दीगर ख़ुसूसिय्यात में मज़ाहिर, आवामिल और क़िफ़ियात को सादगी और बे-साख़्तगी से मुजसम कर देना और जज़्बू की सलगती हुई एक ऐसी तपिश है जिस में धुवां कम और आंच ज़ियादा है, कश्मीर की कांगड़ी जैसी आंच जिस में नरमाई भी है और गर्माई भी।

नसीर अहमद नासिर

(रावलपिंडी, पाकिस्तान)

hmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

इश्क़ तन्हाई

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

इश्क़ तन्हाई

कवयित्री

शबनम अशाई

अनुवादक

उमर फ़रहत

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

इश्क़ तन्हाई

कवयित्री

शबनम अशाई

अनुवादक

उमर फ़रहत

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२४

ISBN 978-81-971200-8-4

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०९९९०२३६८१९, ०८५२७ ४६०२५२

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ५००.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

समर्पण

युवा पीढ़ी के नाम

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मेरे पास
एक अनकही नज़्म है
जो मुझे
सफ़र पे ले जाती है

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ज़िंदगी
जिस पे तुम मरते हो
मुझे क्यों नहीं दिखती

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मैं जीना नहीं जानती
क्योंकि
मुझे कुछ नहीं आता

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम्हारी याद का चेहरा
जिस्म से छुप कर
मेरे मन में
कई रोज़ से रो रहा है

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मुझे मिटाने के
तुम्हारे जतन
रायगां जाएँ कहीं
मैं अपनी आवाज़ दान में दे कर
खामोशी पहन रही हूँ

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मुड़ मुड़ के देख रहे चेहरे को
आँखों से थाम रही हूँ
पर वो दर्द
किसकी आँख
तुम्हारे सीने पे लग गई थी
भटक रहा है
गलियों में
धूप में झुलसती गलियों में !
क्यों बिगाड़ दी
तुमने
आदत
दर्द की ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ये जो तुम अपनी अना को
झिड़की का लिबास पहनाती हो
रिश्तों को
सैलाब में बाढ़ बहा रही हो
मैं बहा सकती हूं .....
अपनी नफ़ी में !
तुम्हारी अना , बे–लिबास
ज़िंदगी की
किस गली से गुजरेगी
साहिल तुम्हारे क़दमों तले
कब तक रहेगी
..... सैलाब
साहिल का लिबास
दलदल से बुनते हैं

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

सिलसिला नाइंसाफ़ियों का
ज़रा भी थमता
मैं तुम्हारी कायनात में
झांक लेती
मेरे मौला
तुम्हारे बंदों ने
मेरे आंसू
सूखने
न दिए कभी

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम जिस से लबरेज़ हो
चेहरा उस का देखा है
बहुत तारिक़ ज़हरीला !
मेरे चेहरे का तिल
तिल नहीं
नील है उसी ज़हर का
न छलक अब .....
मेरे शहद भरे दिल को
अपनी तारिक़ी में
..... न लें अब

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

जिस के क़दमों में
खुद को रखा था
कि किसी लम्हे
मुझे समझेगा
एक ख़्वाब था
जो मेरी आंखों में
रुका पड़ा है .....
आओ कि अब दफ़ना दें
उस ख़्वाब को
उन्हीं पैरों तले

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मन में आते मोहब्बत से
तो मुझ में बस जाते
बदन में मेरे
तुम आए नहीं !
बदन मेरा
मेरे मन के
आहाते में है
तुम कम पड़ गए
आहाते में

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम कहां हो
नज़्म मुझे कब तलक लिए चलेगी?
बेबसी अकेलापन रूठ
खुशी उदासी गुस्से
क़िसे हादसे
जो मुझ पे गुज़रे
नज़्म पे लादे
साँस फूल रही है
नज़्म की
तुम कहां हो
नज़्म मुझे कब तलक लिए चलेगी ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

इंतिशार क्यों बोते हो
वक़्त का साया ढलते ही
नई धूप आएगी
नई कोंपलें खिलेंगी .....
इंतिशार से उगी टहनियां
नफ़रत के फूलों से लद जायेंगी
फूल अपनी खुशबू से कट जायेंगे
ज़मीन अपना सीना चाक करेगी
और खदेड़ देगी अपनी खेत से
तुम्हारा मेंढ़ .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ताबूत उठता क्यों नहीं
कहीं कोई जड़
बिना उखड़ी तो नहीं
जो हो भी तो
महसूस क्यों नहीं करती
के ज़मीन मुझे
माजूल कर चुकी है!

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

पागल पानी
कहां बहा लिए जा रहे हो
कहीं तो किनारे लगाओ
कफ़न मेरा
तार–तार हो रहा है
पागल पानी
कहीं मेरी लहद भी
बहा न लेना !

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ज़रा अपने
बेस्वाद जज़्बों को
रहने दो
हटा दो
खुदग़र्ज़ी की तिश्तरी
मेरी नज़रों से
मैं नज़्म चख के
आई हूँ

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

दिलासे के पानियों से
दाग़ धुलते नहीं
हौसले के ग़ाज़े से
निशान छुपते नहीं
पानी सा बह जा
दाग़ के हिसार से गुज़र जा
जो नहीं गुज़रोगे
तो जमूद में
खुद
दाग़ बन जाओगे

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मैं ज़िंदगी का ज़ख़्म हूँ
जब भी कुरेदो
नज़्म जितनी हूँ !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ऐ काग़ज़
यूँ बेहिस सा
गूँगी आँख से
मुझे न देख
तुम्हारे सुनसान जिस्म में
लफ़्ज़ के घूंघरू
धमकने वाले हैं
क़लम के पैर भारी हैं.....

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

जब मैं छोटी थी
माँ की गोद में थी
उस के रेशमी बोलो से
मैं अक्सर फिसलती थी
और रोती थी.....
अब मैं बड़ी हूँ
ज़िंदगी की गोद में हूँ
उस के चिकने लम्स से
मैं अक्सर फिसलती हूँ
और रोती हूँ.....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

अंधेरा और मैं
न कोई राह
न मंज़िल
न डगर
न ख़्वाब
न दस्तक
न इंतज़ार
न लफ़्ज़
न धुन
न कोई साज़
न आवाज़
मगर खुदावंदा
तुम ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

आँसू बहा दूं
के नज़्म लिखूँ ?
आँसुओं ख़ंका लेंगे
मन को !
नज़्म बहलाएगी
दिल को !
धुल जाऊं
कि बहल जाऊं ?
...नहीं तो निराशा
मेरे पैरों में
पाज़ेब तोड़ कर
फिर कोई सफ़र
बांध देगी

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

उम्मीद की आँखें
ताल्लुक की
राह तक रही हैं
तुम कहाँ छोड़ आए हो
ताल्लुक ?
मैं लाताल्लुकी के फलक से
बग़ैर आहट
उतर जाऊँगी .....

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

उदास की गर्द में
जिंदगी की नसें
जम रही हैं
तुम्हारे जन्मे तज़ाद में
अपनाइयतें रो रही हैं
सर पीट रही हैं मोहब्बतें !
तू किस बात पर रंजीदा है ?
मुझे ताज़ा रफ़ाक़तों को
बचाना है !
ज़िंदगी को साँस लेना है.....
या बारी
कोई राख
रहमतों की गिरा दे
तज़ाद से फैली आग
बुझा दे !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मंज़िलों की तलाश में
जितनी भी मिट्टी कुरेदी थी
उस से अपने मन के
खालीपन को भरना था
तुम उस में
कौन से फूल तलाश करने लगे
उस मिट्टी से
मेरी खोई हुई मोहब्बतों की
खुशबू आती है
जो सिर्फ़
मेरे मन को मोअत्तर करती है
फूल कहीं उगे ही नहीं
मोहब्बत का खेत अभी
बारबर हुआ ही नहीं .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

कैसी बेचैनियाँ
तुम्हें पहन रही है
कौन सा इज़्तिराब
तुम्हें ओढ़ रहा है
ये बेचैनियाँ ये इज़्तिराब
यूं धंधनाते हैं
जैसे ना तन
ना कोई मन तेरा
ना ताना
ना कोई बाना तेरा
ऐसे में
इश्क़ को कहाँ ठहराओगी ?
ना कोई हरीम–ए– दिल
ना सरा–ए–जां कहीं .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

दर्द की आँख से टपका हुआ
मैं वो आंसू हूँ
जो
ज़िंदगी के चेहरे से उतर कर
शहरग पर रुका
ठंडा पड़ रहा है !
ज़रा अपने गर्म होंठ
मेरी हल्क पर रख दो
अपनी जुब्बाँ से
मेरा नमक चूस लो
मुझे पानी कर दो .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

यह कैसा दर्द है
कि चोट नहीं भूलता
ज़ख़्म भर चुका है
जहां से रिस्ता था
वहां अब दाग़ है
दाग़ ज़ख़्म की याद में
मुझे अक्सर
उतार देता है

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम पास थे
मैं अपने साथ रह रही थी
तुम चले गए
तो हर पल
तुम्हारे साथ गुज़रने लगा
इस बात की गवाह
वो सोंधी महक है
जो वफ़ा के आंसुओं से
मन के भीग जाने पर
फैलती है
हर शाम.....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

आंसू नहीं
नज़्म है
नज़्म भी नहीं
शायद तुम हो
तुम से
चश्म मेरी तर है
क़ब्र की मिट्टी सूख रही है.....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

उस का लहजा
मुझे तन्हा कर देता है
और मोहब्बतों को ठंडा.....
यख बस्ता मोहब्बतों पे
मन के पैर टिकते नहीं
फिसलते हैं.....
ठिठुरती तन्हाई
मुझे आतिशदान में
फेंक देती है
मन राख उड़ा लेता है
और लहजा
चिन्गारी !

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मोहब्बत वो नहीं
जो बदन के तार पे बुझती है
मोहब्बत वो है
जो तुम्हारी
नामौजूदगी में
मेरे मन में
बोलती है.....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

उस का मन
तुम्हारी बशारत से
ज़्यादा देख सकता.....
जो वह अपने न होने को काफ़ी न समझती
तुम उस को अपने मुक़ाबल खड़ा देख सकते !
जो वह किसी पुरअसरार हिसार में न होती
तुम उस को सुनहरे पानियों में
तैरता देख सकते !
.... लुटने का लुत्फ़ हो
या हो लुत्फ़–ए– बरबादी
उस की डुबकी
तुम्हारे मन की सकत से बाहर है .....

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

बस तुम्हारे काम के
मेरे हाथ और पैर हैं
रहने दो
सर का क्या करोगे
दिल का क्या करोगे ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

बेटी नहीं
फख्र थी उस की मैं
दास्तान–ए–हयात का
हीरो था वह
दर्शाता था वह मुझे .....
मरा तो शामिल हुए सब
फख्र उस का तोड़ने वाले
मोहब्बतें मिसमार करने वाले ...
जश्न की धुन में थे सब रक़्सां
कि मेरा लाशा चीख पड़ा
ऐ मेरे फख्र!
अपने ख़ातिमे का एहतमाम कर
तुम्हें दर्शाने वाला नहीं रहा !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

पापा
दरवाज़ा खोल दो
अपनी लहद का
मुझे अंदर आने दो
तुम्हारी जागीरों में
मेरी क़ब्र कहीं नहीं है ...

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

नज़्म खड़ी हुई तो थी
जमात नहीं हुई
अज़ान
सभी मस्जिदों में
इक्कठे ही
शुरू हुई
किसी मुएज़्ज़िन की
समझ नहीं आई

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ज़िन्दगी को नूर बख़्शने वाले
नमनाक़ इश्क़ चेहरों का
जनाज़ा निकल चुका है
तदफ़ीन की भीड़ से
एक बीमार ज़िंदगी
नागहाँ उग आई है
जिस की सांस
कोरोना
अपनी अंगुलियों पे गिन रही है
और वह
एक अनदेखे गुबार में
गुम हो रही है !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

वक़्त
कोरोना में ढोनी मारे बैठा है
2020 की धड़कन बढ़ रही है
उम्र के बढ़ते क़दम घट रहे हैं

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ये जो मुझ में सरसराते हो
ख़नक सी बन कर मुझ में
गूँजते हो
कैसे मानूँ
तुम नहीं हो .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

अब कहाँ तकता है कोई
राह मेरी ऐसे
जैसे रात
आँखों में इंतज़ार
और लबों पे प्यार लिए
तुम खड़े थे
वो .....
ख़्वाब क्यों था ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

पहुँच गई फिर क़ब्रिस्तान
..... बाहर सेलाब
..... अंदर सेलाब
बाहर का सेलाब
थम रहा है
पर लहद में अपनी
आओगी कैसे
सेलाबों से फूल गई हो
अंदर का सेलाब भूल गई हो

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मेरे नहीं
मजबूरी के ये आंसू हैं
खुदा के मंशा पे चलने की मजबूरी के .....
आसमानी फ़ैसलों को जीने की मजबूरी के .....
मोहब्बतों की जन्मी तन्हाई के
ये आंसू हैं
मेरे नहीं
मैं रोती नहीं
मजबूरी रोती है मुझे !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

किसी ज़मीन ने जज़्ब नहीं किया
भटकते रहे सहरा सहरा
सहरा से सहरा तक की मसाफ़तें
मुझ में कदम रखते ही
तराशती है अपनी अपनी ख़ानक़ाह
असबात ओ नफ़ी के दरमियान
हर ख़ानक़ाह के
सातौं तवाफ़ करती हूँ
और भस्म हो जाती हूँ
दायरों में .....
मिट्टी में मिट्टी के जज़्ब होने का ख़याल
सर पटकता है !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

लफ़्ज़ों का फ़ाहा
मन के छालों पे रखने से
नज़्म का दर्द थमता नहीं .....
कुछ तो पस–ए–अल्फ़ाज़ है
जो नज़्म में
रिस्ता नहीं

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

किसी नाकरदा जुर्म की पादाश में
ज़िंदगी से सबकदोश हो गई हूँ
सहम के खुद में बैठी हुई हूँ
कायनात
मेरी चौकड़ी में समट गई है
ज़िंदगी की हर शय अपनी आंखें
मुझ पे मरकूज़ किए हुए हैं
मैं मर चकी हूँ कि आया ज़िंदा हूँ
उन की नज़रें
तय नहीं कर पातीं .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

लबों पे लफ़्ज़ जम रहे हैं
मानी मन में थम रहे हैं
लफ़्ज़ ओ मानी के ताबीदन में
संतूर की तान टूट रही है
ज़िंदगी
गलियों गलियों फिरती है
बेसुरे संतूर पे
गूँगे गीत गातें हैं

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम मोहब्बत से मेरा मन गूंधते
में रौशनाई से
अपनी तन्हाई नहीं गूंधती !
तन्हाई गूंधते गूंधते
मैं रोटी पकाना
भूल गई हूँ
क्या औरत ऐसी होती है !
हैरत के दुख को
कैसे सहलाऊँ !
मन के तसमे कस्ती हूँ
सफ़र मेरा ख़्वाब नहीं
घर के दरवाज़े पर
अना का ताला है

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

अलफ़ाज़ का पेराहन
तार तार हुआ है
ज़बान को ज़िंदान में
डाल दिया गया है !
नौज़ायदा लफ़्ज़
बांझ मन के
थन चूस रहे हैं
तन का जमाल
रेशम ओ कमख़्वाब में
पनाह लिए हुए है
मानी
ज़ेब तन क्या कर लें ?
पाया तख़्त के फरमान का
इंतज़ार है .....

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

दूसरों की आंख से देखते देखते
तुम्हारे यकीन की हद खो गई है
यकीन का मिज़ाज
वुलर जैसा साधा है
यह आंखों का ऐतबार कर लेता है !
कभी अपनी आंखों से ख्वाब देखते
उन के टूट जाने पे
कर्चियाँ जोड़ते
तो तुम यकीन
ख्वाबों से बुनते .....
ज़रा अपनी आंखों से देखो
दूसरों की आंख से नहीं !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ख्वाब
आंख की गोद से
उत्तरा नहीं
रस्ता क्या दिखता
भटक रही हूँ
भटकन की कोई छत नहीं
खुला आसमान
और ढेर सारी फिसलन
पाँव तो टिकता नहीं
फिसलन
पापोश को बांहों में लेती है
आंख ख्वाब को गोद में लिए है
मैं ख्वाब सहलाऊँ
कि तस्में बांधूं ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

बर्फबारी
जैसे धरती पर नहीं
मेरे मन में हो रही हो .....
क्या तुम ने बर्फ को
किसी मन में जमते देखा है?
जमी हुई बर्फ पर
खिलाड़ी
फिसलन खेलते हैं !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

शायरा नहीं
तलाश हूँ
कोई तलाश .....
एक इज़्तिराब
तैरता है जो लहू में मेरे
पल पल .....
बोलता है जो मन में मेरे
पल पल .....
.....कि कोई खलिश
जो भर देती है तलाश को
जैसे भर देती है बाँसुरी को
मिठास
सांस की .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ज़िंदगी
रूह को रूहानियत
और वजूद को
वजूदियत बख्शने वाली
आदाएँ
जब से तुम ने खो दी हैं
मैं लुगत में छुप रही हूँ !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

रात समंदर ख़ामोश था
उजाले ने कितना शोर जन्मा
नज़्म कैसे होगी अब ?
तन्नूर जैसे तपते दिन में
खुद को भुनना होगा अब
हयात की जुस्तजू में
जीवन जीना होगा अब
धुध खामोशी की
छाएगी फिर कब ?
नज़्म कैसे होगी अब !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

काला सूरज
फिर तुलू हो रहा है
फिर ठोकर खाऊंगी
चकना चूर हो जाऊंगी !
मौत अपनी फाँसी
अगर मेरे गले में डालती
मेरी खैर थी .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

खर्च लो
आज मुझे पूरा खर्च लो
ज़िन्दगी के सूंसमज की सलाई
टूट रही है

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मेरा हासिल
जो तुम्हारी ज़द में
राख हो गया
मेरा लिबास है
लाहसिली के लिबास में
लम्हा भर
खुद को सोचो
तो मुझे जानो

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम्हारी तंग गली में
मेरी बेकदरी
रक़्स करती है
दर्द के घुंघरू
खनकते नहीं
रोते हैं
पर खनक दर्द की
मन की प्याली में
छलक रही है .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ये बरसती बारिश है कि
तुम्हारी रफ़ाक़त की बूदें
जो मुझ पे बरस रही हैं
चाहत का अनोखा सेक
मेरे भीगे तन को सुखा रहा है
पर भीगा मन
तुम्हारी छाँव लिए
वहीं कहीं
तुम्हारे पास पड़ा हुआ है
देखो ज़रा
तुम्हारी मसाफ़तों को
इस का अहसास
नहीं शायद

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ए काश धनक रंग में
एक बार वो भी रंग जाते
गुनाह उन के घुल जाते
मोहब्बतों की सैराबी में
अपनाईत में घुल जाते
महकते फूल खिल जाते
वख़्त कोहराम टल जाता .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

अपने बदन से
रूह उतार फेंकी थी
जब तुम्हारे
जिस्म के सतसंग में
आई थी .....
जिस्मों का रेवड़
गुज़र गया
तुम कहां हो ?
मेरे बदन के
अंधे हाथ
तुम्हें तलाशें
कि अपनी रूह .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

रात नौयित बदल गई
उदासी की शिकस्त खुरदा खुशी ने
जब दस्तक दी .....
शश–ओ–पंज में मेरे हाथ
मन के दरवाज़े पे ठहर गए
किवाड़ खोलूँ कि नहीं
दिल पे चस्पां
"मोहब्बत मोकूफ़ है"
इश्तिहार पढ़ूं कि नहीं .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

अंबार लगे हैं
अज़्ज़ीतौं की रूई के
कितनी अज़िय्यतों का सूत कातूँ
मन की तकली निढ़ाल है !
रूई के सीने में छुपी
कोई चिंगारी आग लगा दे
इस से पहले चादर बुनती हूँ
बुनकर नहीं हूँ
चादर का सायबान करती हूँ !
तुम ना खोलो
अपने थान .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

काश यूँ होता
कि वफ़ा
मन काफ़िरन चाक कर के
फ़रार पाती !
बखिए अधैड़ कर
ऊधम जोत के
मन को छोड़ जाती
..... इंतज़ार तमाम
कट जाते
मन की आंख लग जाती .....

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

जाने
कहां दब गए हैं
इंसान की खोज में
मेरा चेहरा
पत्थर हो गया
जानवरों की
भयानक आवाज़ों में
मैंने मेरी आवाज़ खो दी है
पत्थर चेहरा
बिन आवाज़ का वजूद
कितना भयानक होगा
तुम्हें मालूम भी है ?
जो है तो
देखते क्या हो
तुम तो खुदा हो !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम भी तो कोई ख्वाब देखो
फूल के होंठ से ओस ले लो .....
वफ़ा की ओस में भीगी ठिठुर रही हो
धूप में कुछ पल पंख तो खोलो
जीवन की ज़रा जुल्फ तो खोलो
सुलझाते सुलझाते उलझ रही हो
खुद को सालिम ख़र्च रही हो
ख्वाब सब के पिरोते–पिरोते
धागा रेशम हो गई हो
अपना कुछ तो पसंद अज़ कर लो
तुम भी तो कोई ख्वाब देखो

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

लो
य़ह क़ब्र भी मुनहदिम कर दी
अब कहाँ पे खोलें
कुफ़्ल दर–ए–ज़ात का
और सहलाओं
आबले मन के !
कहाँ पे दफ़नाऊंगी
शजरे की तेहरीर अब
जो लौह–ए–महफ़ूज़ को
ज़ीस्त कर लों !
क्या करूं
मैं क्या करूं ?
ज़ंजीर–ए–ज़ीस्त की पकड़ में नहीं
अपनी ज़ात में मुक़फ़्फ़ल हूं .....

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

जिसे ज़िंदगी
ख़ामोश न कर सकी
वो ICU में
चुप हो गया

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम जिस धुन पे नाच रहे थे
वो रक़्क़ासा मौत निकली
मैं किस से क़दम मिलाऊँ ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मेरा सफ़र
उस ताबूत में दफ़न है
जो तुम्हें क़ब्रिस्तान पहुंचा के आया !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ज़िन्दगी
में तेरे मसरफ़ में नहीं
लुग़त में बंद
एक शब्द हूँ
ज़िंदा कैसे हो जाऊँ ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

शातिर मुठियों में दब रही हूँ,
चालाकियाँ मुझे निचोड़ रही हैं
मेरा वुजूद उस मलमल सा हो रहा है,
जिस का कोई ताना और न बाना हो

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ऐश–ट्रे भर जाए
तो देखना
यह तुम्हारी सिगरेट से झड़ी
कोई राख नहीं
कर्ब है मेरी रूह का .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम्हारे बदन के हाथ
उस शहद से
कुछ भी तराश लेते हैं
जो मेरे मन के होंठों से
गिरता है .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

डरना सहमना
दिल का धड़कना मोकूफ करना
मामूल बन जाए तो ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मेरे सर पे
जो छतरी है
इसमें कोई कपड़ा नहीं
बस तितलियां हैं

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मेरे बदन से तकती नसें
तुम्हारे लबों की छुवन संभाले
मुझ से अक्सर पूछती हैं
वो अतायें अता की
क्या मोहब्बत नहीं थी ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

किधर से हवा चली
दस्तार अजदाद के उड़ा कर
सरक गई कहां से ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

नदी को बहना नहीं आता
अपनी ही ज़मीनों में
खो जाती है
खोई हुई नदी की बेचैनी
मुझे पहन रही है
खोए हुए बहाव़ का इज़्तिराब
मुझे ओढ़ रहा है !
हुलिया मेरा बदल रहा है
तुम कैसे खोज लोगे मुझे
इन ज़मीनों में !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

लाओ ज़रा लफ़्ज़ के हाथ
मेरे मन पे फेर
मन की धड़कन
कुछ तेज़ है !
उस ने अपनी आँखों से
इश्क़ देखा .....
लाओ ज़रा लफ़्ज़ के हाथ
मेरे मन पे फेर
यह इश्क़ का साया है
कि कोई
ना–गुफ़्ता खलिश ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

क़लील गुनाह
थोड़ा सुकून
चंद मुस्कराहटें
थोड़ा खुलूस
कुछ बेबाकी
थोड़ा जीवन
और क्या चाहिए था
बस वो ख़्वाब
कि आँख से गिरता नहीं
उम्दा लिबास वाला .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मौसम की बात कर सकते हैं
मिज़ाजों की नहीं
मोहब्बतों के मौसम में
सोच को अपनी आँख से नहीं
मन की आँख से
देखना चाहिए
वफ़ा की कुर्बानी
सब से बड़ी कुर्बानी है

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

शनाख़्त
घर में जो उन की होती
यूँ बाज़ारों में
न ढूँढ़ती फिरतीं
वो अपने
Name Plate .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

बदन निढाल हो गया
रूह के तवाफ़ में
पहना लिबास खो दिया

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

यह जो दलदल पे
यूं मु'अल्लक़ खड़ी हो
धंस जाओगी .....
चलोगी
तो फिसल जाओगी .....
दलदल तुम्हें
बहा भी तो नहीं सकती
कहाँ जाओगी
किधर जाओगी
कितने दिन बाकी हैं
मौसम की करवट में
दलदल के सूख जाने से पहले
जो कहीं
कोई दरार मिले
तो छुप जाना .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

किसी शब्द में
छुपा होता है बारूद
जो होंठों से निकलते ही
उड़ा देता है इमारत
इश्क़ की .....
और दब जाता है
मलबे में सब कुछ
मोहब्बत की इबारत भी !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम्हारे कद की नहीं
न पैर से पैर
न माथे से माथा मिले
तोंद कितने कदम चलेगी ?
तोंद कौन से ख्वाब देखेगी
ख्याल पछतावा नहीं
माथे का टिका है .....
फैसला पछतावा है

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

देख
देख ज़रा
शान–ए–आशिक़ी देख
मोहब्बतों की तलब में
लुटी हुई वो
किस शान से
रंग–ए–इश्क़ में मलबूस
कुलीदें संभाल रही हैं
मोहब्बतों की हश्र सामानियाँ
महफ़ूज़ कर रही हैं
इश्क़ की तमाम दौलत जैसे
इस बावली के
ख़ज़ाने में है!

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

उकताहट नहीं
बेज़ारी नहीं
जो मन में गूंज रहा है
कुछ और है...
बे–ऐतमादी है
कि कोई ख़ौफ़
ना–मालूम सा...
ख़ौफ़ का तालुक़
मेरे इश्क़ सा था
वो इश्क़
जो हम भूले भी नहीं
और हर पल याद भी नहीं
जिस के साथ
रूमान वाबस्ता है
तारी है...

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मोहब्बत तुम्हारे दर पे
ख्वार होती है बार–बार
तुम बहन बेटी मां
सब को गाढ़ दो
मोहब्बत फिर नज़र न आएगी
कभी अपने दर पे

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ये पगडंडियाँ
बनाते–बनाते
तुम्हारे हाथ
क्या हुए होंगे
मेरे पैर
उन पे चलते–चलते
सहम रहे हैं .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम कहाँ मरे हो
मेरे मन के मुसल्ला पर
तुम तो सजदे में हो

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

जिस के गिरद मेरी कायनात घूमती
वो मुझे
ज़िंदगी के पायदान पे लटका के
निकल गया .....

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

शब भर
रात
मेरे थन चुस्ती रही
पौ फटे ही
सुबह के सीने पे
सो गई .....
मेरी बाँझ बांहें
दिन के अजाले में
तन्हाईयां सहलाती हैं

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

लज़्ज़त–ए –काम–ओ–दहन
दरकार है तुम्हें
मेरे यहां
ग़म का दस्तरखां बिछा हुआ है
सुराहियाँ
आंसुओं से छलक रही हैं
मन में मेरे
छाले पड़े हैं वस्वसों के
राहत का जाम पीने वाले
तुम्हारा एहतिमाम
कौन करे ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ख़्याल
तज्रिबा
दुख
खुशी
सब आवाज़ उतारते हैं
जब
अपनों के चेहरों से
अजनबी उभरते हैं

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

सूरज तुम यूं ही
मुझे फ़ना करने के दर पे हो
देखो अंगड़ाई ने बांहें फैलाई
पल भर मुझे ज़िंदा रहने दो
सुबह को ज़रा ठंडक लेने दो
सब्ज़ा ज़ारों को भीगने दो
पंखुड़ीयों के लब
तर होने दो
सूरज तुम यूं ही
मुझे फ़ना करने के दर पे हो
पल भर में
खुद फ़ना हो जाऊंगी
मैं
ओस हूं ----------

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मुझे बार बार फ़ाश न कर
महरम नहीं है तो
उन नग़्मों से
जो सोज़–ए–इश्क़ की तार पे
बजते हैं .....
महरम नहीं है तो
दश्त–ए–वफ़ा से
जिस का ज़र्रा–ज़र्रा
धुन बन जाता है
महरम नहीं है तो
मुझ से .....
वफ़ा मेरी फ़ितरत है
उल्फ़त मेरा इश्क़
हर शै की नफ़ी न कर
मुझे बार बार फ़ाश न कर

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangot

शबनम अशाई की शायरी शिकस्ता ख़्वाबों
शिकस्ता आरज़ूओं की शायरी है जिसमें ज़ि
की तल्खियों और उसकी खार शगाफियो
बयान है, जिसमें दाख़िली आज़ार का इज़
है। इस दिल शिकस्तगी ने शबनम अशाई
फितरत के दामन में पनाह लेने पर मजबूर
दिया है। यही वजह है कि वह अपने वजूद
तज्सीम (personification) कभी दरख़्त
करती हैं तो कभी मुहाजिर परिंदों से। इस त
वह गोया अपनी तज्सीम के लिए या अ
वजूदी इज़हार के लिए नए इस्तेआरे और
अलामतें वज़्ज़ करती हैं। जब इन्सानी वज
की असल अलामत और इस्तेआरे मादूम
जाएँ तो दूसरे इस्तेआरों की तलाश एक अ
फितरी बन जाती है। शबनम अशाई ने अप
वजूद की इस्तेआराती तक़लीब के जरीए य
वाजेह कर दिया है कि वजूद की जो हक़ीक
माहियत और उस की हक़ीक़ी अलामत है, उ
की गुमशुदगी या उस का इन्हिदाम ही इन्सा
को दूसरी राहें शक्लें इतख़्यार करने पर मजबू
करता है।

हक़्क़ानी अलक़ासमी
(दिल्ली, भारत)

Digitized By e Gang

उमर फ़रहत

शबनम अशाई

शबनम आशाई की बेशतर नज़्मों हसी पेकरों को मुंकलिब कर के एक नया तश्बीही इलाक़ा या मानवी इंसिलाकात का मुतहर्रिक अर्सा जन्म देती हैं। लिखने का अमल जितना आसान नजर आता है उतना सहल अलहसूल होता नहीं। कागज, क़लम और लफ्ज़ की यकजाई मानूस तज़रबात और फहम आमा से माखूज़ तसव्वुरात को यकसर शिकस्त कर देती है। आँख का काम देखना है बोलना नहीं कागज जिंदगी की हरारत से महरूम होने के बावजूद कायनात को इज़हार के मुख्तलिफ रंगों से आबाद रखती है। कागज़ तो महज़ तरसील का एक बे-हिस माश्रूज़ है। कागज़ की आँख भी कुव्वत-गुयाई से आरी होती है और उस के वुजूद-ए-बर्ग ओ बार नहीं लाता। कागज़ और लफ़्ज़ का रिश्ता कार-ए-तखलीक में उन दोनों की तलव्वुस का इशारिया है। सौत ओ सदा के ला-ताश्दाद इम्कानात की आबियारी क़लम करता है। इज़हार सरिश्त इनसानी का असासी हवाला ही नहीं बल्के खुद इनसान है। संसान जिस्म और क़लम के पैर भारी होना सरासर इनसानी तम्सील है।

शाफे किदवाई
(अलीगढ़, भारत)

मूल्य 500.00 रुपये

ISBN 978-81-971200-8-4
9 788197 120084

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी -508 गली नं. 17,विजय पार्क,दिल्ली -110053
मो.08527460252,9990236819
ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस: ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद,
उत्तर प्रदेश, पिन-201102